मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

एम.ए (हिन्दी) द्वतीय सत्र परीक्ष, मई-2015

1044

पाठ्यक्रम 6

समय: 3 घंटे पूर्णांक: 70

विषय: आधुनिक हिन्दी काव्य (भाग-2, 1936 के बाद)

सूचना: 1. सभी प्रश्नों का उत्तर देना अनिवर्य हैं। 7x10=70

2. सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(क) संदर्भ सहित व्यख्या कीजिए।

1. बाप बेटा बेचता है
   शर्म से आंखे न उठतीं,
   रोष से छाती धधकती,
   और अपनी दासता का शूल उर को छेदता है.....

अथवा

और बीज फिर बो देता है
नये वर्ष में नयी फसल के।
ढेर अन्न का लग जाता है।
यह धरती है उस किसान की।

2. तुम को लोग भूले जा रहे हैं
   क्यों कि तुम जाने जाते रहे हो अपने अत्याचारों के कारण
   और आज तुम हाथ खींचे हुए हो
   कि तुम्हारे अत्याचोरों को लोग भूल जाएँ.....

अथवा

इतिहास का एक क्षण होता है
जब सारीशक्तियँ
मिल जाती हैं उसे अपने पक्ष में पलट लेने के लिए
और जिनको उन्होंने निकल बाहर कर दिया है धीरे-धीरे.....

3. तुम बढ़ो, प्लवन तुम्हारा घरघराता उठे,
   यह स्रोतस्विनी ही कर्मनाशा कीर्तिनाश! घोर काल-प्रवाहिनी बन जाय
   तो हमें स्वीकार है वह भी। उसी में रेत होकर
   फिर छनेंगे हम। जमेंगे हम। कहीं फिर पैर टेकेंगे।

(P.T.O)

अथवा

किन्तु हम है द्वीप
हम धारा नहीं हैं
स्थिर समर्पण है हमारा। हम सदा से द्वीप है स्रोतस्विनी के
किन्तु हम बहते नहीं हैं। क्योंकि बहना रेत होना है।

4. बहुत दिनों के बाद
अब की मैं जी-भर सुन पाया
धान कूटती किशोरियों की कोकिल- कंठी तान
-बहुत दिनों के बाद.....

अथवा

"साले, हमें सब पता है,
कहाँ-कहाँ जाता है तू !
भोपाल,जयपूर,पटना,चंडीगढ़,
लखनऊ,शिमला,नई दिल्ली.....

(ख) सभी प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है।

5. वर्तमान संदर्भ में 'जंगल का दर्द' की प्रसंगिकता पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

'जंगल का दर्द' में चित्रत सामाजिक यथार्त पर एक लेख लिखिए।

6. 'संशय की एक रात' का सारांश लिखिए।

अथवा

'संसय की एक रात' के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण कीजिए।

7. धूमिल की कविता में चित्रित विद्रोही स्वर पर प्रकाश डालिए।

अथवा

नागार्जुन की कविताओं में चित्रित व्यंग्यात्मक प्रतिरोध पर प्रकाश डालिए।

****